

वङ्किरभिप्रणीतः BHATT. 1, 4.

— परिप्र herbringen: प्र पतितुः परमाप्तीयते परि R. V. 1, 141, 4.

— विप्र 1) richten (den Geist) auf: संघे च विनाशास्ते मरणास्ते च जीविते संयोगे च वियोगास्ते को नु विप्रणयेन्मनः ॥ MBh. 12, 3891. fg. — 2) verstreichen lassen: संवत्सरं विप्रणयेत् MBh. 12, 3560.

— संप्र 1) zusammentragen, einsammeln: यशो रत्नस्व विदुर संप्रणीतम् MBh. 2, 2126. दयावानप्रमत्तश्च करान्संप्रणयेन्मृदुन् Tribut erheben 12, 3300. — 2) दण्डम् den Stock führen, Strafe verhängen: (दण्डम्) पथार्कतः संप्रणयेन्नेष्टन्यायवर्तिषु M. 7, 16. — 3) abfassen, verfassen: त्रीणि श्लोकमरुह्णाणि — मुनिना संप्रणीतानि MBh. 1, 561. — Vgl. संप्रणेतुर.

— प्रति 1) zurückführen KĀTJ. ÇR. 5, 5, 13. (तम्) प्रतिनेतुमपोध्याम् R. 2, 90, 17 (99, 25 GORR.). 6, 10, 34. (नौ) गृह्याय प्रतिनेष्यति 2, 98, 22. — 2) zuführen: तेभ्यं दानप्रति नयामि बद्धा AV. 8, 8, 10. In der Stelle भद्र न सर्वमेतद्विदितं गृहं प्रतिनेतुं युज्यते PANKAT. 96, 4 ist, wie schon BENFEY gethan hat, प्रति von नेतुं zu trennen (in's Haus tragen). — 3) beimgen: स्थालीपाके घृतपिण्डान्प्रतिनीयाद्भाति KAUC. 52. 20. 35. 87.

— वि 1) wegführen: योषणा प्रतीची वशमृष्ट्यं वि नीयते R. V. 8, 46, 33. 9, 15, 3. entfernen, ablenken: वि ते कृतिं नयामसि AV. 5, 7, 7. med. heraus —, herablocken: वि बदापो न पर्वतस्य पृष्ठादुक्त्रेभिरिन्द्रानयत् पृष्टैः R. V. 6, 24, 6. verscheuchen, vertreiben, entfernen, Jmd Etwas nehmen; act.: धातव्यान्पद्यनेषीः समस्तान् HARIV. 7391. भारमेन विनेष्यामि पाण्डवानाम् MBh. 6, 2579. अग्निस्ते तेजो मा वि नेतुं nehme nicht weg, raube nicht TS. 4, 1, 40, 3. कौधम् ÇĀṆKH. Br. 12, 3. अहं हि ते विनेष्यामि युद्धमद्भामितः परम् MBh. 5, 3475. दर्पमस्याः R. 3, 62, 29. Bhāg. P. 9, 10, 7. आयासम् R. 2, 69, 3. दुःखम् 4, 61, 23. मन्थम् RAGH. 2, 49. वर्षाविक्रियाम् 15, 48. उदकासम् । सद्यो ऽसुभिः सह विनेष्यति Bhāg. P. 2, 7, 25. 7, 8, 54. विनीतशल्यास्तुरगान् MBh. 7, 4346. विनीतकित्त्वेष 5, 7518. ऽनिद्रा RAGH. 5, 72. 9, 71. ऽवेद 13, 35. ऽमोह (gedr. निवीतमोह) MBh. 12, 8949. विनीत = कृत, अयनीत H. an. 3, 299. MED. t. 154. fgg. med.: व्यनेष्यथा धार्तराष्ट्रस्य दर्पम् MBh. 5, 755. Dieses ist nach P. 4, 3, 37 und Vop. 23, 29 nur dann am Platze, wenn das Subject Etwas an ihm Haftendes (aber kein körperliches Leiden) vertreibt: क्रोधं विनयते er verscheucht, unterdrückt seinen Zorn P., Sch. Vop.; aber गण्डं (गाण्डं) विनयति er vertreibt sich den Kropf (eine Beule) diess. व्यनयत् R. 2, 76, 23. विनयते स्म तद्योधा मधुभिर्विजयममम् RAGH. 4, 65. विनेष्ये वा प्रियान्प्राणान् so v. a. sterben BHATT. 8, 21. ग्रन्थिं विनीय कृदयस्य MBh. 5, 1263. विनीय तमायासम् R. 5, 72, 1. KUMĀRAS. 1, 9. KĀM. NĪTIS. 12, 18. — 2) vertheilen, verrihren, umrihren R. V. 9, 24, 3. 27, 3. सुत इन्द्रो पवित्रं आ नर्भिर्यतो वि नीयसे 99, 8. आशिर् विनीय ÇAT. Br. 4, 3, 2, 19. KĀTJ. ÇR. 10, 3, 11. — 3) scheiteln: केशान् KĀTJ. ÇR. 5, 2, 15. PĀR. GRHJ. 1, 15, 2, 1. — 4) dehnen: अयस्तप्तम् ÇĀṆKH. Br. 22, 6. ausbreiten: निक्तस्यास्य सप्तस्य जाम्बूनदसमवचि । शस्यवृष्या विनीतायामिच्छाम्यंरुमुपासितम् ॥ R. 3, 49, 29. — 5) anleiten, veranlassen zu: अत्यं न मिहे वि नयसि वज्रिनुमुत्तं डुरुति R. V. 1, 64, 6. — 6) lenken: विनयसं जवेनाद्यान् MBh. 4, 599. — 7) zähmen, abrichten, dressiren: वन्यान्विनेष्यन्निव डुष्टसञ्चान् RAGH. 2, 8. विनीत gezähmt, dressirt AK. 2, 8, 2, 12. H. 1235. an. 3, 299. MED. t. 154. विनीतैस्तु ब्रह्मव्रत्यमाश्रुगैः M. 4, 68. नाविनीतैर्वज्रेभ्यः 67. MBh. 4, 368. fg. SUPR. 2, 421, 13. तपस्विसंसर्गविनीतसञ्चे

तपोवने RAGH. 14, 75. züchtigen: गणाञ्जनपदानपि । स्वधर्माञ्जलितावाज्ञा विनीय स्थापयेत्पथि JĀGĀ. 1, 360. KUMĀRAS. 3, 41. erziehen, unterrichten, unterweisen: गदासिचर्मग्रन्थेषु प्रानस्त्रेषु शितासु रथाश्वयाने — विनयेत् MBh. 3, 12585. 12, 3974. RAGH. 3, 29. 5, 10. KUMĀRAS. 1, 34. KATHĀS. 5, 139. 9, 72. RĀGĀ-TAR. 4, 51. 6, 68. विनीत unterrichtet, bewandert; wohlgezogen, gesittet, bescheiden; = निभूत AK. 3, 1, 25. H. 431. an. 3, 299. MED. t. 154. fg. = निजितेन्द्रिय, जितेन्द्रिय H. an. MED. = विनयप्राक्त, विनयान्वित diess. आन्वीजिकयो दण्डनीत्या तथैव च JĀGĀ. 1, 310. विद्या R. 1, 7, 4. 5, 32, 6. 7. निमर्गसंस्कार RAGH. 3, 35. मिथ्या M. 4, 196. विनीतः प्रविशेतभाम् 8, 1. वाचा भृशं विनीतः (sic) स्याद्दृष्टेन तथा नुरः MBh. 1, 5606. प्राज्ञेन विनीतेन ज्ञानविज्ञानवेदिना M. 9, 41. JĀGĀ. 1, 308. MBh. 3, 3059. ARĀ. 2, 10. R. 1, 4, 27. 2, 33, 27. 4, 61, 42. BHARTṚ. 3, 47. KUMĀRAS. 7, 73. RAGH. 10, 13. VARĀH. BRH. S. 101, 11. BHĀG. P. 3, 13, 5. Z. d. d. m. G. 14, 372, 20. VET. in LA. 31, 15. तप्युवाच विनीतवत् । वचनम् R. 1, 54, 13. अ 3, 55, 37. विनीतात्मन् M. 7, 39. R. 1, 2, 24. अविनीतात्मन् JĀGĀ. 3, 155. विनीतमुख HARIV. 9457. वाक्य 6519. विनीतविषाभरण M. 8, 2. ÇĀK. 8, 12. VARĀH. BRH. S. 2, Anf. Vgl. डुर्विनीत. — 8) zu Ende bringen, verbringen: कथमपि यामिनीं विनीय Glt. 8, 1. durchführen, ausführen: सुविनीतेन कर्मणा MBh. 13, 2201. तर्कया सुविनीतया 4, 892. — 9) med. abtragen, entrichten P. 1, 3, 36. Vop. 23, 28. करं विनयते P., Sch. ऋणम् Vop. — 10) med. zu frommen Zwecken verausgaben: शतं विनयते = धर्मार्थं विनियुङ्के P. 1, 3, 36. Sch. द्रव्यम् Vop. 23, 28. Nach P. und Vop. schlechtweg in der Bed. verausgaben (व्यय). — Vgl. विनय, ऽनयन, ऽनीत, ऽनेतर, ऽनेत्र, ऽनेय. — desid. med. sich Etwas vertreiben wollen: मत्सरं विनिनीषमाण आस्ते ÇĀṆKH. ÇR. 17, 17, 2. — अमिवि unterweisen, unterrichten: वैद्विर्भविनीतः R. 2, 1, 15. विद्यासु R. 6, 11, 10. कस्यां कलायामभिविनीते भवत्यौ MĀLAV. 66, 6. — संवि verscheuchen, unterdrücken: संविनीय मदक्रोधौ मानमीर्षौ च MBh. 12, 3476.

— सम् 1) zusammenführen, zusammenschaaren, vereinigen: यदीदृक् पृथग्यै संनयान्यदैवयून् R. V. 10, 27, 2. यः संयामात्रयति सं पृथे AV. 4, 24, 7. 2, 30, 2. 10, 85, 23. स पृथैर् मित्रेण संनयति TS. 2, 1, 9, 4. zusammenfügen: इति दत्तः कविर्यज्ञं भद्रं रुद्रावमर्शितम् — संनये Bhāg. P. 4, 7, 48. — 2) lenken, leiten: पुवं मित्रं जन्तं यतयः सं च नययः R. V. 5, 65, 6. सं पञ्चन रेदसो निनेथ 7, 28, 3. — 3) führen, richten auf: ब्रह्मण्यात्मानं संनयन् Bhāg. P. 6, 10, 11. herbeiführen MBh. 1, 7412. zuführen, herbeischaffen, verschaffen: भद्राज्ञः श्रेयः समनैष्ट (समनयीष्ट PĀR. GRHJ. 3, 1) देवाः TS. 5, 7, 2, 4. तत्पशव् ओषधीभ्यो ऽध्यात्मन्समनयन् TBr. 2, 5, 2, 3. पशुभ्यः ÇAT. Br. 14, 1, 5, 3. SHADV. Br. 4, 6 (med.). मृगवत्या श्यामया च मुरदिषे । नैकनैवेद्यसामयौ समनीयत नित्यशः Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 12, 12. 13. — 4) Jmd beschenken mit (instr.): समिन्द्रं पो मर्षसा नेषि गोभिः सं सूरिर्भिरिवः सं स्वस्ति R. V. 5, 42, 4. 6, 54, 1. — 5) erstatten, heimgen, bezahlen: ऋणम् R. V. 8, 47, 17. AV. 19, 45, 1. AIT. Br. 7, 13. TS. 2, 5, 2, 3. M. 9, 107. — 6) vermengen: लोहितद्रव्येन संनीय KAUC. 36. मन्थम् ÇAT. Br. 14, 9, 2, 1. कंसे पृषदास्यं संनीय (आनीय ÇAT. Br.) BRH. Ān. Up. 6, 4, 24. दधि मधु घृतं संनीय (संसृज्य ÇAT. Br.) 25. GOBB. 4, 1, 7, 2, 3, 8. सार्ववर्णिकमन्त्राग्यं संनीय M. 3, 244. Insbes. von dem im Ritual häufig vorkommenden Mengen süßer und saurer Milch (zu dem sogen. सोनाट्यं